

# वैद सम्मान से नवाजे गए प्रभात त्रिपाठी और गीतांजलि श्री

प्रसून लतात

नई दिल्ली, 12 मार्च। इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में बुधवार को अत्यंत सादगी और सुरुचिपूर्ण माहौल में आयोजित एक समारोह में प्रख्यात चित्रकार सैयद हैदर रजा ने हिंदी के दो रचनाकारों प्रभात त्रिपाठी और गीतांजलि श्री को 'वैद सम्मान' से सम्मानित किया। त्रिपाठी को 2011-12 और गीतांजलि श्री को 2012-13 के लिए यह सम्मान दिया गया।

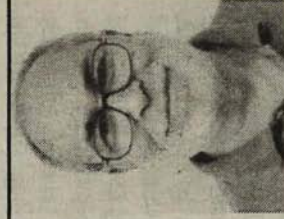
यह सम्मान चित्रकार मनीष पुष्कले ने वयोवृद्ध कथाकार-नाटककार कृष्ण बलदेव वैद के नाम पर स्थापित किया है। किसी चित्रकार द्वारा किसी साहित्यकार के नाम पर स्थापित अपने ढंग के अकेले इस पुरस्कार से अब तक ध्रुव शुक्ल, उदय प्रकाश और अनुपम मिश्र नवाजे जा चुके हैं। इस सम्मान के तहत प्रशस्ति पत्र और एक लाख की धनराशि दी जाती थी। इस मौके पर कृष्ण बलदेव वैद उपस्थित नहीं हो सके। वे इन दिनों अमेरिका में रहते हैं।

समारोह के प्रारंभ में सम्मान के स्थायी जूरी और कवि-आलोचक अशोक वाजपेयी ने वैद सम्मान की कसौटियों का जिक्र करते हुए कहा कि रचनाकारों का चुनाव करते समय मैंने उन्हीं को विचार में लिया है, जिन्होंने चालू मुहावरों से अलग अपने मुहावरे विकसित किए हैं, जिनमें प्रयोगशील साहसिकता का प्रमाण मिलता है और भीड़ से अक्सर अलग चुपचाप खड़े नजर आते हैं। उन्होंने बुधवार को सम्मानित होने वाले रचनाकारों के लेखन के बारे में चर्चा करते हुए कहा कि प्रभात त्रिपाठी की कविताओं में गहरी एंद्रियता, सघन स्मृति, गड्ढिन बिंबधर्मिता, उच्छल प्रेम, सजल वैचारिकता है। प्रभात ने कविता के अलावा अलोचना, व्यापक मानवीय सरोकारों के उजाले में अच्छी लिखी हैं। उड़िया में उनके अनुवाद अपनी अलग जगह रखते हैं।

वाजपेयी ने गीतांजलि श्री को इधर के उभरे कथाकारों में उल्लेखनीय बताते हुए कहा कि उनमें हिंदी अंचल में बढ़ती सांप्रदायिकता और



गीतांजलि श्री



प्रभात त्रिपाठी

असहिष्णुता के संदर्भ में साहित्य की कठिन पर अनिवार्य सांस्कृतिक जिम्मेदारी का गहरा-सजग बोध है। उन्होंने कहा कि गीतांजलि श्री ने कथाकथन की अपनी शैली विकसित की है और उपन्यास की विधा में नई जमीन तोड़ी है।

सम्मान को स्वीकार करने के बाद गीतांजलि श्री ने आभार जताया और अपनी कहानी 'मैंने अपने-आपको भागते देखा है' के एक अंश का पाठ किया। इसी तरह प्रभात त्रिपाठी ने अपनी चार छोटी-छोटी और नई-पुरानी कविताओं का पाठ किया। इस मौके पर अलग तरह का गद्य लिखने वाले पर्यावरणविद और गांधी मार्ग के संपादक अनुपम मिश्र ने अपने लिखे लेखों के तीन अंशों का पाठ किया, जिनमें एक अंश अपने कवि पिता भवानी प्रसाद मिश्र पर लिखे लेख से था और बाकी अंश पानी के रखरखाव करने वाले पुरखों के माथे के बारे में और मौजूदा समय में जनमानस को दिग्भ्रमित करने वाले जबर्न प्रचलित शब्दों की कलई खोलने वाले थे।

समारोह में पाकिस्तान से आई उर्दू कलमकार फहमीदा रियाज और सिंधी कवयित्री अमीर सिंधू भी मौजूद थीं। सिंधू ने अपनी एक कविता पहले सिंधी में फिर उसे उर्दू में सुनाया। स्वागत राकांपा सांसद और लेखक देवी प्रसाद त्रिपाठी ने किया, जबकि धन्यवाद ज्ञापन वैद सम्मान के संस्थापक मनीष पुष्कले ने किया। कार्यक्रम का संचालन यतींद्र मिश्र ने किया।